How have digital initiatives in India contributed to the functioning of the education system in the country? Elaborate on your answer.

The covid-19 pandemic dragged the traditional model of offline education due to which, online education came to the rescue of the cause of education. Moreover, even before the pandemic, digital initiatives have helped to promote inclusivity of education. However, there are several challenges of online education and the same needs to be fixed.

Digital Initiatives in Education by Government of India

- **National Mission on Education through Information and Communication Technology (NMEICT):** Utilizes ICT to make teaching and learning accessible and easier.
- **SWAYAM:** Offers online courses from Class 9 to Postgraduate level.
- **SWAYAM Prabha:** Delivers 32 DTH channels for quality education 24x7.
- **NDL (National Digital Library):** Virtual repository with single-window access to learning resources.
- **e-Pathshala:** Provides digital study material.
- **DIKSHA:** Platform for quality e-content in school education.
- **PM eVIDYA:** Integrates all digital/online/on-air educational efforts for multimodal learning.
- **Digitally Accessible Information System (DAISY) (NIOS):** Ensures accessible content for differently-abled learners.

Advantages of Digital Education	Disadvantages of Digital Education
• **Inclusivity:** Reaches remote areas; enables learning in preferred environments. • **Flexibility:** Offers diverse courses anytime, anywhere (e.g., e-Pathshala, SWAYAM). • **Teacher Shortage Solution:** Addresses imbalance in pupil-teacher ratio, especially in rural areas. • **Multi-disciplinary Access:** Expands availability of varied programs across disciplines. • **Cost-Effective:** Reduces costs related to study materials and commuting.	• **Digital Divide:** Excludes economically weaker sections lacking internet or devices. • **Loss of Social Learning:** Undermines traditional classroom's role in holistic development. • **Commercialization Risk:** Involvement of corporates may lead to profit-driven education, excluding poor students.

Digital education is very useful yet not completely successful in India. Hence, there is still a lot to do in terms of checking if students' entitlements are not being compromised or in providing meaningful academic curriculum alternatives.

भारत में डिजिटल पहल ने देश की शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार से योगदान दिया है? विस्तारित कीजिये।

कोविड-19 ने ऑफ़लाइन शिक्षा के पारंपरिक मॉडल को पूर्ण रूप से बदल दिया, जिसके कारण ऑनलाइन शिक्षा शिक्षा के उद्देश्य की रक्षा के लिए सामने आई। इसके अलावा, महामारी पूर्व भी, डिजिटल पहलों ने शिक्षा की समावेशिता को बढ़ावा देने में मदद की है। हालाँकि, ऑनलाइन शिक्षा की कई चुनौतियाँ हैं और उन्हें सुधारने की आवश्यकता है।

भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल पहल

- **नेशनल मिशन ऑन एजुकेशन थ्रू इनफार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी (NMEICT):** शिक्षण और सीखने को सुलभ बनाने हेतु **ICT** का उपयोग करता है।
- **SWAYAM**: कक्षा 9 से स्नातकोत्तर स्तर तक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है।
- **SWAYAM** प्रभा: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए 24x7 32 डीटीएच चैनल प्रदान करता है।
- **NDL (राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी):** सीखने के संसाधनों तक एकल-खिड़की पहुँच के साथ आभासी भंडार।
- **ई-पाठशाला:** डिजिटल अध्ययन सामग्री प्रदान करता है।
- **DIKSHA:** स्कूली शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री हेतु मंच।
- **PM e-VIDYA:** मल्टीमॉडल लर्निंग हेतु सभी डिजिटल/ऑनलाइन/ऑन-एयर शैक्षिक प्रयासों को एकीकृत करता है।
- डिजिटली एक्सेसिबल इनफार्मेशन सिस्टम **(DAISY) (NIOS):** दिव्यांग शिक्षार्थियों हेतु सुलभ सामग्री सुनिश्चित करता है।

डिजिटल शिक्षा के लाभ	डिजिटल शिक्षा के हानियाँ
• **समावेशिता:** दूरदराज क्षेत्रों तक पहुँच; पसंदीदा वातावरण में सीखने में सक्षम बनाती है। • **लचीलापन:** किसी भी समय, कहीं भी विविध पाठ्यक्रम प्रदान करता है (उदाहरण हेतु, ई-पाठशाला, **SWAYAM**)। • **शिक्षकों की कमी का समाधान:** छात्र-शिक्षक अनुपात में असंतुलन को संबोधित करता है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। • **बहु-विषयक पहुँच:** विभिन्न विषयों में विभिन्न कार्यक्रमों की उपलब्धता का विस्तार करता है। • **लागत प्रभावी:** अध्ययन सामग्री एवं आवागमन से संबंधित लागतों को कम करता है।	• **डिजिटल विभाजन:** आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग जिनके पास इंटरनेट या डिवाइस नहीं है, की पहुँच नही है। • **सामाजिक शिक्षा की क्षति:** समग्र विकास में पारंपरिक कक्षा की भूमिका को कमज़ोर करता है। • **व्यावसायीकरण जोखिम:** कॉरपोरेट भागीदारी से लाभ-संचालित शिक्षा को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे गरीब छात्र बाहर हो सकते हैं।

डिजिटल शिक्षा उपयोगी है, परन्तु भारत में यह पूर्ण रूप से सफल नहीं है। इसलिए, यह जांचने हेतु कि छात्रों के अधिकारों से समझौता तो नहीं किया जा रहा है, या सार्थक शैक्षणिक पाठ्यक्रम विकल्प क्या हो सकते हैं, के मामले में अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।